बनास जन

शताब्दी कथाकार

अमृतराय

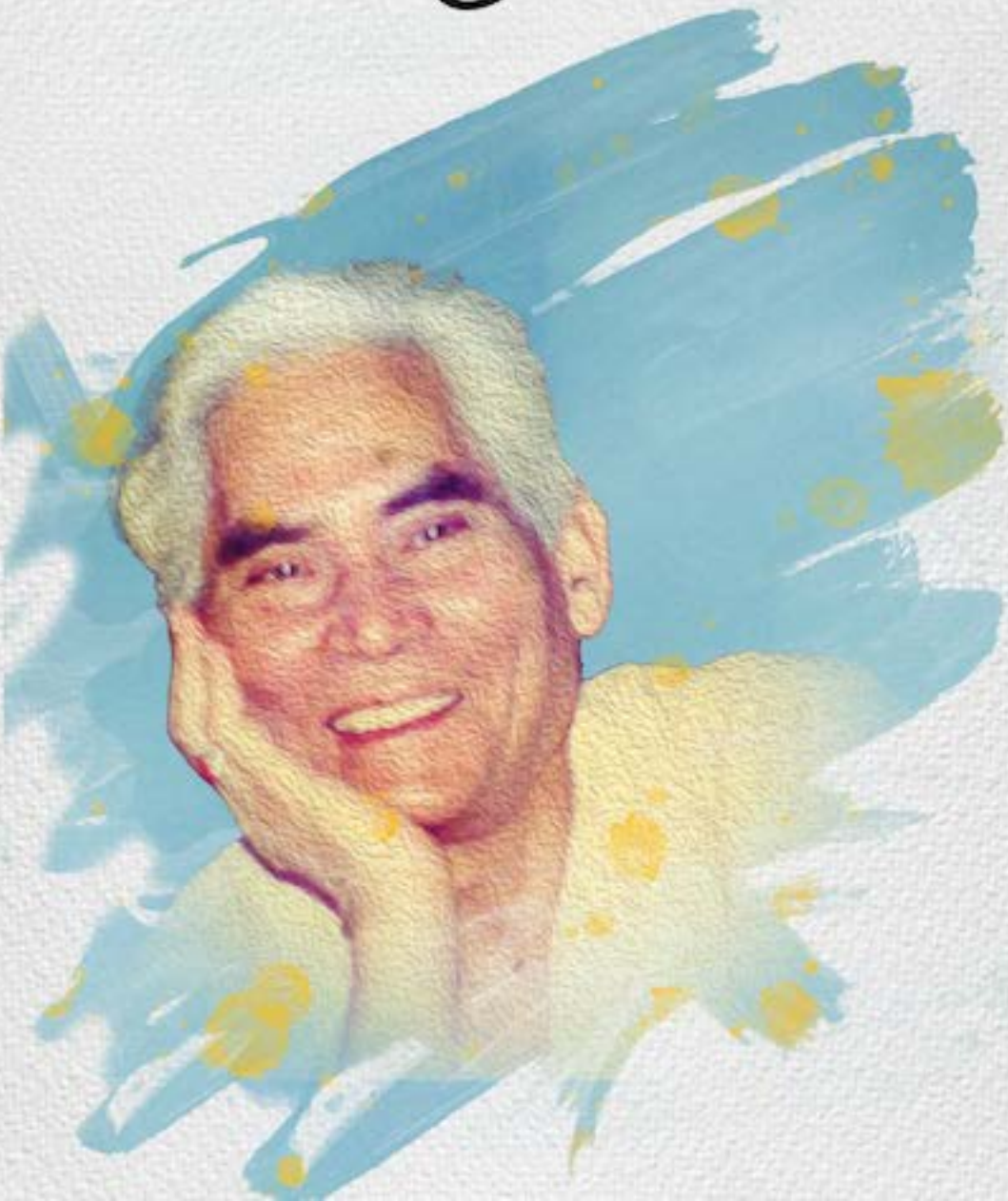

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

शताब्दी कथाकार अमृतराय

नामदेव

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 40 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–65 रुपये
80 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–105 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

प्रस्तावना	4
अमृतराय : एक साहित्यिक परिचय	5
अमृतराय की कहानियाँ	12
कथ्य और संवेदना	12
वर्गीय चेतना और वर्ग-संघर्ष	18
चरित्र	21
कुछ श्रेष्ठ कहानियों का विश्लेषण	31
कहानी-कला का विकास : भाषा और शिल्प	48
उपसंहार	57

प्रस्तावना

अमृतराय हिंदी कथा साहित्य और हिंदी गद्य साहित्य के एक दक्ष और रचनात्मक संभावनाओं से परिपूर्ण लेखक थे। उनकी रचनाएँ अपने समय का आईना हैं जिनमें भारतीय समाज पूरे वजूद के साथ उपस्थित है। समाज के विभिन्न पहलुओं को देखने-समझने के कारण ही अमृतराय अपनी रचनाधर्मिता में मनुष्यता को केंद्र में रख पाते हैं। उनकी यह ललक फैशनेबल नहीं है बल्कि हिंदी साहित्य की प्रगतिशील विरासत की देन है। अमृतराय का व्यक्तित्व और लेखन दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। वह जैसा लिखते थे वैसा ही सामाजिक व्यवहार भी रखते थे। लेखन, चिंतन और व्यक्तित्व का यह साम्य न सिर्फ दिलचस्प है बल्कि लेखन परंपरा में यह दुर्लभ भी है। अमृतराय लेखन की इसी शैली-परंपरा के लेखक थे जिन्होंने बतौर कहानीकार, उपन्यासकार, जीवनीकार अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाई। जिस तरह से 'कलम का सिपाही' में वह अपनी लेखनी का लोहा मनवाते हैं उसी तरह वह कहानी-लेखन में भी पूरे दमख़म के साथ प्रस्तुत होते हैं। उनकी कहानियाँ आम आदमी और मध्यम वर्गीय लोगों की जिंदगी की आकांक्षाओं की आवाज बनकर पूरी साफगोई के साथ सामने आती हैं। जिनमें कोई छल-कपट या स्वार्थ की भावना नहीं है। जटिल जीवन संघर्ष और जटिल सांस्कृतिक-सामाजिक-राजनीतिक कुचक्रों के बीच पीस रहे व्यक्ति की कठिन कथा को सादगी और सहजता से कह जाना अमृतराय की लेखनी की विशेषता है। इक्कीसवीं सदी में आज हिंदी कथा साहित्य और हिंदी गद्य साहित्य रचनात्मकता की बुलंदियों पर अवश्य खड़ा है लेकिन अमृतराय जैसे दृष्टिवान सजग और बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक की कमी जरूर अखरती है। आज जब लेखकीय प्रतिस्पर्धा में हद से ज्यादा नीचे गिर जाने की होड़ लगी हो, रचनाओं की बाढ़ में व्यक्तित्व ही गायब हो रहा हो, ऐसे में एक सतत चिंतनशील लेखक, जिसने निर्भय होकर वैचारिक क्षेत्र में बड़े बड़े प्रतिवादों का सामना किया और कभी वैचारिक समझौता नहीं किया, को याद करना जरूरी हो जाता है। अपने सिद्धांतों और मूल्यों से आजीवन जुड़े रहने की जिद अमृतराय जैसा लेखक ही कर सकता था। आज तेजी से बदलते दौर में जहां ईमानदारी, वैज्ञानिकता और प्रतिबद्धता महज मजाक बन कर रह गई हैं और इनकी जगह अब आडम्बर तथा आत्मकेंद्रित मनोविकार आ गए हैं तब अमृतराय की कहानियाँ और उनका समूचा लेखन एक सकारात्मक संदेश देती हैं। कहानी को सरल, स्वाभाविक, आकर्षक और सुंदर ढंग से पेश करना ही अमृतराय का रचना कौशल है। वैसे भी अमृतराय को पढ़ना-समझना एक युगबोध का अन्वेषण है। उनकी कहानियाँ भी हिंदी कहानी साहित्य की विरासत के अनेक आयामों को सहेजती हुई प्रतीत होती हैं जिसका आभास उनकी कहानियों से गुजर कर ही होता है। व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है या समाज। नैतिकता महत्त्वपूर्ण है या व्यवहार। इन सब सवालों से मुठभेड़ करते हुए अमृतराय व्यक्ति को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है। बड़े-बड़े आदर्शों, सिद्धांतों, आसमानी बातों और किताबों को यहाँ भले ही कोई विशेष तवज्जो नहीं दी गई हो लेकिन व्यक्ति की सहज और मानवीय आकांक्षाओं को कहानियों में इस तरह से पिरो दिया गया है कि वह सहज रूप से समाज के यथार्थ चित्र बन गये हैं।

भारतीय समाज में मौजूद गैर बराबरी के विरुद्ध अमृतराय जीवन भर सांस्कृतिक मोर्चे पर सक्रिय रहे थे, उनकी शताब्दी अभी अभी गुजरी है, उम्मीद है कि मनुष्यता के लिए कठिन होते रहे दिनों में उनकी कहानियों का यह अध्ययन पाठकों को उपयोगी लगेगा।

अमृतराय : एक साहित्यिक परिचय

''आदमी की जिन्दगी में सन्-सम्वत् का भी महत्त्व होता है। वह कब और कहाँ पैदा हुआ, कहाँ पढ़ा-लिखा और कहाँ रहा। इससे उसके युग-परिवेश आदि का पता लगता है। परन्तु इससे कहीं अधिक महत्त्व है, मेरी दृष्टि में उसके व्यक्तित्व का जिसके भीतर जीवन में घटी घटनाएँ एक विशिष्ट स्वभाव और संस्कारों का निर्माण करती हैं।''[1]

अतः अमृतराय के साहित्यिक परिचय का अनुशीलन करने से पहले यहाँ जरूरी है कि सर्व प्रथम अमृतराय के जीवन और व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया जाए।

अमृतराय का जन्म 15 अगस्त 1921 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ। वे प्रेमचन्द के सुपुत्र व चतुर्थ संतान थे। उनके जन्म के लगभग सात-आठ महीने बाद प्रेमचन्द बनारस जाकर अपने ग्राम लमही में रहने लगे। लेकिन कुछ समय बाद उन्हें सपरिवार लखनऊ आना पड़ गया। इस तरह अमृतराय का प्रारम्भिक जीवन (शैशव और बाल्यकाल) कानपुर, लमही, बनारस एवं लखनऊ में व्यतीत हुआ।

प्रयाग की कायस्थ पाठशाला से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अमृतराय पुनः बनारस आ गये और यहीं क्वींस कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। संयोगवश उन्हें अध्ययन के लिए पुनः प्रयाग आना पड़ा तथा उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वर्ष 1940 में बी.ए. तथा 1942 में एम.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। उन्होंने बी.ए. में हिन्दी साहित्य विषय लिया था और एम.ए. अंग्रेजी साहित्य में किया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी एवं अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू और बांग्ला आदि भाषाओं पर अमृतराय का पूर्ण अधिकार था। इसका प्रमाण उनकी कृतियाँ हैं।

अमृतराय तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों में बहुत सक्रिय थे। प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान साम्यवादी आंदोलन के संपर्क में आ गये। 1942 में वह कम्युनिस्ट पार्टी के विधिवत् सदस्य बन गये और सक्रिय रूप से पार्टी के आंदोलन में भाग लेने लगे तथा मजदूर आंदोलन में विशेष रूप से उन्होंने भाग लिया। साथ ही उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ, भारत सोवियत मैत्री संघ एवं विश्वशांति आंदोलन आदि कई सांस्कृतिक आंदोलनों में उत्साहपूर्वक कार्य किया। साम्यवादी दल से सम्बन्धित होने के कारण उन्हें भारत रक्षा कानून के अंतर्गत 1950 में अनिश्चितकाल के लिए नज़रबंद कर जेल भेज दिया गया परन्तु 'हैवियस' के अंतर्गत प्रयाग हाईकोर्ट ने उक्त कानून को गैरकानूनी घोषित कर दिया और उक्त कानून के अंतर्गत कैद सभी राजबन्दी एक साथ छूट गये। इस प्रकार अमृतराय लगभग चार महीने जेल में रहे और उन्होंने अपने पहले उपन्यास 'बीज' का लेखन वहीं प्रारम्भ किया था।

1956 में अमृतराय ने कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों से विरोध होने कारण पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। परन्तु साम्यवाद या मार्क्सवाद के प्रति उनकी आस्था कभी कम नहीं हुई। स्वयं उन्होंने स्वीकार किया है, ''सही या गलत, समस्त ज्ञान-विज्ञान की तरह मार्क्सवाद को भी मुझे अपने ढंग से समझना और परिभाषित करना अच्छा लगता है और ठीक मालूम होता है। जिस आलोचक सम्प्रदाय को मेरी साम्यवादी विचारधारा पर आपत्ति है--उसमें अधिकतर ऐसे ही लोग हैं जिन्होंने मेरी रचनाओं को पढ़ने का कष्ट न उठाकर सुनी-सुनायी बातों के आधार पर अपना मत बना लिया है और उसे पकड़े बैठे हैं। अगर उन्होंने मेरी चीजों को पढ़ने की तकलीफ गवारा की होती तो उनके आगे यह बात साफ हो गयी होती, कि मेरा साम्यवाद क्या है और कैसा है, वह कहाँ पर दूसरे साम्यवादियों जैसा है और कहाँ उससे भिन्न है।''

प्रेमचन्द ने जिस तरह से बाल-विधवा शिवरानी देवी से विवाह कर सामाजिक रूढ़ियों से लोहा लेकर आदर्श प्रस्तुत किया था उसी तरह उनके पुत्र अमृतराय ने भी सुभद्राकुमारी चौहान की सुपुत्री 'सुधा चौहान' से अन्तर्जातीय विवाह कर प्रगतिशीलता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया था। अमृतराय